प्रशस्ति-पत्र

बख़िदमते अक़दस क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै0 कल्बे जवाद नक़वी साहिब

कानपुर में क़ाएदे मिल्लत का पुरख़ुलूस व पुरजोश इस्तेक़बाल

जिनके रुतबे हैं सिवा ....

क़ाएदे मिल्लत की मुजाहिदाना ज़िन्दगी और मुख़लिसाना कोशिशों के एतेराफ व एहतेराम में कानपुर जैसे मशहूरे ज़माना शहर में शीआ, सुन्नी बल्कि हिन्दु मुस्लिम की शिरकत से एक इस्तेक़बालिया जुलूस निकाला गया और पटकापुर में इस्तेक़बालिया जलसा 17 सितम्बर 2006 इतवार को मुनअक़िद हुआ। इस प्रोग्राम का आयोजन ''मौलाना कल्बे जवाद फैन्स ऐसोसिएशन'' की तरफ से हुआ था। स्वागत पुराने गंगा पुल पर तक़रीबन 11 बजे हुआ जहाँ से क़ाएदे मिल्लत अपने चाहने वालों से भरी हुई बसों, जीपों, कारों और मोटर साईकलों के बीच पटकापुर से मिले चौराहे तक आये ओर वहाँ से नवाब साहब पटकापुर के अज़ाख़ाने तक जिस–जिस गली से जुलूस गुज़रता रहा फूलों की बारिश लगातार हर घर से होती रही। कितने कुन्टल फूल क़ाएदे मिल्लत पर निछावर कर दिये गये इसका अन्दाज़ा यक़ीनन मुश्किल है अगरचे ऐसा ही प्रोग्राम कुछ दिन पहले महल्ला शीश महल, लखनऊ की तरफ से हुआ था और वह भी अपनी मिसाल आप था। पूरा महल्ला क़ाएद के स्वागत में दुलहन बना दिया गया था, काश यह बात कज फ़िक्र व कज अमल मोलवियों के समझ में आ जाती कि इज़्ज़त अल्लाह देता है। **(असीफ जाएसी)**

भारतवर्ष में शिया समुदाय का सबसे प्रसिद्ध व सम्मानित घराना ***''ख़ानदाने इज्तेहाद''*** है जिसको विश्व में अपनी शिक्षा प्रसार व कार्यों के संदर्भ में सम्मान की दृष्टिसे देखा जाता है जिसके संस्थापक भारत के प्रथम शिया ''फ़क़ीह'' (विद्वान) ***''आयतुल्लाहिल उज़्मा जनाब सैय्यिद दिलदार अली नक़वी ग़ुफ़रान मआब''*** हैं जिन्होंने माहे रजब 1200 हिजरी में शीओं को एक सम्प्रदाय का स्थान देकर पहली बार ''नमाज़े जुमा'' व ''नमाज़े जमाअत'' स्थापित की और लखनऊ में मदरसए ''इल्म व इज्तेहाद'' की स्थापना के बाद हज़रत ग़ुफ़रान मआब के पाँच योग्य उत्तराधिकारियों ने इस मदरसे को चौमुखी उन्नति देकर शिक्षा के ऐसे शिखर पर पहुँचा दिया कि सारे विश्व के शिक्षित समाज में गर्व और सम्मान की दृष्टि से देखा जाने लगा।

सारे भारत में उलमा व विचारक फैला दिये गए हर जगह धार्मिक वातावरण तैय्यार होने लगा शैक्षिक व धार्मिक विचारों का आदान प्रदान

होने लगा समाज में प्रचलित बेजा रस्मो रिवाज व कुरीतियों पर प्रहार किया गया और एक स्वच्छ शिया समाज का निर्माण किया गया।

उसी महान परिवार के योग्य उत्तराधिकारियों में ***क़ाएदे मुअज़्ज़म हुज्जतुल इस्लाम मौलाना सैय्यद कल्बे जवाद नक़वी*** हैं जो अपने महान पूर्वजों की स्थापित परम्पराओं और कार्यों को बड़ी कुशलता के साथ आगे बढ़ा रहे हैं।

क़ाएदे मुअज़्ज़म ने अपने स्वर्गवासी पिता ***प्रोफेसर मौलाना सैय्यद कल्बे आबिद साहब क़िब्ला*** के अकस्मात निधन के कारण उनके अधूरे कार्यों को बड़ी ही कुशलता और परिश्रम से पूरा किया जो सर्वविदित है।

क़ाएदे मुअज़्ज़म ने एक ओर अज़ादारी के लिए कुर्बानियाँ दीं और अज़ादारी के रुके हुए जुलूसों को बहाल कराया यही नहीं बल्कि वक़्फ की सम्पत्तियों को हासिल करने के लिए देश व्यापी एक आन्दोलन आरम्भ किया परिणाम स्वरूप वक़्फ की बड़ी–बड़ी सम्पत्तियाँ हासिल करके गरीबों विधवाओं और ज़रूरतमन्दों में वितरित की तथा वक़्फ में पुनः उन धार्मिक स्थलों को भी प्राप्त किया जो पूर्व में वक़्फ से अलग कर दिये गये इसका एक जवलन्त उदाहरण इमामबाड़ा सिबतैनाबाद है तथा हुसैनाबाद की जीर्ण शीर्ण इमारतों का पुनरद्वार जनाब के अथक प्रयत्नों से सम्पन्न हुआ। शिक्षा के क्षेत्रों में जनाब ने ***''नूरे हिदायत फाउण्डेशन''*** बनाया तथा ***''शुआ–ए–अमल''*** के नाम से एक पत्रिका निकाली जो हर मास निकलती है और भारत की एक स्थापित पत्रिका है।

मौलाना ने अपने स्वर्गीय पिता द्वारा महिलाओं के लिए स्थापित मदरसे ***''मकतबतुज़्ज़हरा''*** का और विस्तार किया जो आने वाले समय में महिलाओं की शिक्षा सम्बन्धित आवश्यकताओं के लिए प्रयाप्त सिद्ध होगा। इसके साथ ही साथ शिया धर्म के विद्यार्थियों के लिए क़ाएदे मिल्लत ***''मदरस–ए–इज्तेहाद हज़रत ग़ुफ़रान मआब''*** को क़ायम करने की कोशिश कर रहे हैं।

आगे हम सब ***''मौलाना कल्बे जवाद फैन्स एसोसिएशन''*** की ओर से क़ाएदे मिल्लत की सेवा में जनाब द्वारा किये गये कार्यों, सेवाओं के लिए सदा आभारी रहेंगे तथा सिपास नामा पेश करके हम सब तथा संस्था अपने को गर्वन्वित महसूस करती है।

मिनजानिबः–

मौलाना कल्बे जवाद फैन्स एसोसिएशन

सफेद कोठी, हाता नवाब साहब, कानपुर